अध्याय 5: कबीर के दोहे

विषय-सूची 7 प्रश्नावली · 28 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1	मेरी समझ से — MCQ	7 प्रश्न
प्रश्नावली 5.2	मिलकर करें मिलान (क) — पंक्ति और अर्थ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 5.3	मिलकर करें मिलान (ख) — दोहे की पूरक पंक्तियाँ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 5.4	पंक्तियों पर चर्चा — भावार्थ	2 प्रश्न
प्रश्नावली 5.5	सोच-विचार के लिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 5.6	दोहे की रचना — काव्य-विशेषताएँ	8 प्रश्न
प्रश्नावली 5.7	आज के समय में — दोहा पहचान	6 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1 — मेरी समझ से — MCQ

प्रश्न 1

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।" इस दोहे में किसके विषय में बताया गया है? (क) श्रम का महत्व (ख) गुरु का महत्व (ग) ज्ञान का महत्व (घ) भक्ति का महत्व

हल

कबीर ने इस दोहे में गुरु और गोविंद (ईश्वर) दोनों के सामने खड़े होने पर गुरु को पहले प्रणाम करने की बात कही है।

कारण — गुरु ने ही शिष्य को गोविंद का मार्ग दिखाया, अर्थात गुरु के बिना ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं।

अतः यह दोहा 'गुरु का महत्व' विषय पर है। (ख) और (ग) दोनों को सही माना जा सकता है।

उत्तर: (ख) गुरु का महत्व (और साथ ही ज्ञान का महत्व — दोनों सही हैं)

प्रश्न 2

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप। अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।" इस दोहे का मूल संदेश क्या है? (क) हमेशा चुप रहने में ही हमारी भलाई है (ख) बारिश और धूप से बचना चाहिए (ग) हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है (घ) हमेशा मधुर वाणी बोलनी चाहिए

हल

कबीर कहते हैं कि न अत्यधिक बोलना अच्छा है, न एकदम चुप रहना; न बहुत बरसना अच्छा है, न अधिक धूप।

यह दोहा जीवन के हर पहलू में संतुलन की महत्ता बताता है।

इसलिए मूल संदेश है — 'हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है'।

उत्तर: (ग) हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है

प्रश्न 3

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।" यह दोहा किस जीवन कौशल को विकसित करने पर बल देता है? (क) समय का सदुपयोग करना (ख) दूसरों के काम आना (ग) परिश्रम और लगन से काम करना (घ) सभी के प्रति उदार रहना

हल

खजूर का पेड़ ऊँचा तो होता है, लेकिन न तो राही को छाया देता है और न फल सुलभ होता है।
इस दोहे में कबीर कहते हैं कि केवल बड़ा या ऊँचा होना पर्याप्त नहीं; व्यक्ति को दूसरों के काम भी आना चाहिए।
अतः यह दोहा 'दूसरों के काम आना' जीवन-कौशल पर बल देता है।

उत्तर: (ख) दूसरों के काम आना

प्रश्न 4

"ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।" इस दोहे के अनुसार मधुर वाणी बोलने का सबसे बड़ा लाभ क्या है? (क) लोग हमारी प्रशंसा और सम्मान करने लगते हैं (ख) दूसरों और स्वयं को मानसिक शांति मिलती है (ग) किसी से विवाद होने पर उसमें जीत हासिल होती है (घ) सुनने वालों का मन इधर-उधर भटकने लगता है

हल

कबीर कहते हैं कि अहंकार छोड़कर मधुर वाणी बोलने से दूसरे लोग शीतल (शांत) होते हैं और स्वयं वक्ता का मन भी शीतल हो जाता है।
अर्थात मधुर वाणी का सबसे बड़ा लाभ दूसरों और स्वयं दोनों को मानसिक शांति मिलना है।

उत्तर: (ख) दूसरों और स्वयं को मानसिक शांति मिलती है

प्रश्न 5

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप।।" इस दोहे से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (क) सत्य और झूठ में कोई अंतर नहीं होता है (ख) सत्य का पालन करना किसी साधना से कम नहीं है (ग) बाहरी परिस्थितियाँ ही जीवन में सफलता तय करती हैं (घ) सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है जिससे हृदय प्रकाशित होता है

हल

कबीर कहते हैं कि सत्य बोलना और सत्य पर चलना सबसे बड़ी तपस्या है; झूठ बोलना सबसे बड़ा पाप है।
जिसके हृदय में सत्य है, उसके हृदय में स्वयं गुरु (ईश्वर) का वास होता है।
अतः निष्कर्ष है — सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है जिससे हृदय प्रकाशित होता है।

उत्तर: (घ) सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है जिससे हृदय प्रकाशित होता है

प्रश्न 6

"निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।" यहाँ जीवन में किस दृष्टिकोण को अपनाने की सलाह दी गई है? (क) आलोचना से बचना चाहिए (ख) आलोचकों को दूर रखना चाहिए

(ग) आलोचकों को पास रखना चाहिए (घ) आलोचकों की निंदा करनी चाहिए

हल

कबीर कहते हैं कि निंदक (आलोचक) को अपने घर के आँगन में ही रखना चाहिए।
वह बिना पानी-साबुन के हमारे स्वभाव को निर्मल (शुद्ध) कर देता है — अर्थात हमारी गलतियाँ बताकर हमें सुधरने का अवसर देता है।
अतः सलाह है — आलोचकों को पास रखना चाहिए।

उत्तर: (ग) आलोचकों को पास रखना चाहिए

प्रश्न 7

"साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय। सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।" इस दोहे में 'सूप' किसका प्रतीक है? (क) मन की कल्पनाओं का (ख) सुख-सुविधाओं का (ग) विवेक और सूझबूझ का (घ) कठोर और क्रोधी स्वभाव का

हल

सूप एक ऐसा पात्र है जिसमें अनाज को फटकारा जाता है — वह सार (ठोस दाने) को रख लेता है और थोथा (भूसा/कचरा) उड़ा देता है।
कबीर यहाँ संत/साधु के लिए यही विशेषता माँगते हैं — वह सार तत्व (अच्छाई/सत्य) को ग्रहण करे और व्यर्थ (बुराई) को छोड़ दे।
अतः 'सूप' यहाँ 'विवेक और सूझबूझ' का प्रतीक है।

उत्तर: (ग) विवेक और सूझबूझ का

प्रश्नावली 5.2 — मिलकर करें मिलान (क) — पंक्ति और अर्थ

प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 में दोहों की पंक्तियाँ दी गई हैं। इन्हें स्तंभ 2 में दिए उनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए— स्तंभ 1: 1. गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय। 2. अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप। 3. ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय। 4. निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय। 5. साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय। 6. कबिरा मन पंछी भया, भावैं तहाँ जाय। 7. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। 8. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। स्तंभ 2: 1. सत्य का पालन कठिन है और झूठ पाप के समान है। 2. बड़ा होने के साथ व्यक्ति को उदार भी होना चाहिए। 3. गुरु शिष्य का मार्गदर्शन करते हैं और शिष्य गुरु का आदर करते हैं। 4. मन को नियंत्रित करना और सही दिशा में ले जाना महत्वपूर्ण है। 5. जीवन में संतुलन महत्वपूर्ण है। 6. हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए जिससे मन को शांति प्राप्त हो सके। 7. विवेकशील व्यक्ति को अच्छे और बुरे की पहचान होती है। 8. आलोचकों को अपने पास रखना चाहिए। वे हमें हमारी गलतियाँ बताते हैं।

हल

1 (गुरु गोविंद दोऊ खड़े...) → 3 (गुरु शिष्य का मार्गदर्शन करते हैं और शिष्य गुरु का आदर करते हैं।)
2 (अति का भला न बोलना...) → 5 (जीवन में संतुलन महत्वपूर्ण है।)
3 (ऐसी बानी बोलिए...) → 6 (हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए जिससे मन को शांति प्राप्त हो सके।)
4 (निंदक नियरे राखिए...) → 8 (आलोचकों को अपने पास रखना चाहिए। वे हमें हमारी गलतियाँ बताते हैं।)
5 (साधू ऐसा चाहिए...) → 7 (विवेकशील व्यक्ति को अच्छे और बुरे की पहचान होती है।)
6 (कबिरा मन पंछी भया...) → 4 (मन को नियंत्रित करना और सही दिशा में ले जाना महत्वपूर्ण है।)
7 (साँच बराबर तप नहीं...) → 1 (सत्य का पालन कठिन है और झूठ पाप के समान है।)
8 (बड़ा हुआ तो क्या हुआ...) → 2 (बड़ा होने के साथ व्यक्ति को उदार भी होना चाहिए।)

उत्तर: 1→3, 2→5, 3→6, 4→8, 5→7, 6→4, 7→1, 8→2

प्रश्नावली 5.3 — मिलकर करें मिलान (ख) — दोहे की पूरक पंक्तियाँ

प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 में दी गई दोहों की पंक्तियों को स्तंभ 2 में दी गई उपयुक्त पंक्तियों से जोड़िए— स्तंभ 1: 1. गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय। 2. अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप। 3. ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय। 4. निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय। 5. साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय। 6. कबिरा मन पंछी भया, भावैं तहाँ जाय। 7. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। 8. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। स्तंभ 2: 1. बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।। 2. औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।। 3. जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप।। 4. सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।। 5. पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।। 6. अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।। 7. जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।। 8. बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

हल

1 (गुरु गोविंद दोऊ खड़े...) → 8 (बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।)
2 (अति का भला न बोलना...) → 6 (अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।)
3 (ऐसी बानी बोलिए...) → 2 (औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।)
4 (निंदक नियरे राखिए...) → 1 (बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।)
5 (साधू ऐसा चाहिए...) → 4 (सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।)
6 (कबिरा मन पंछी भया...) → 7 (जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।)
7 (बड़ा हुआ तो क्या हुआ...) → 5 (पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।)
8 (साँच बराबर तप नहीं...) → 3 (जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप।।)

उत्तर: 1→8, 2→6, 3→2, 4→1, 5→4, 6→7, 7→5, 8→3

प्रश्नावली 5.4 — पंक्तियों पर चर्चा — भावार्थ

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए— (क) "कबिरा मन पंछी भया, भावैं तहाँ जाय। जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।"

हल

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि मनुष्य का मन पक्षी की तरह स्वतंत्र है — वह जहाँ चाहे उड़ जाता है।
अर्थात मन पर नियंत्रण करना कठिन है; वह कभी इधर, कभी उधर भटकता रहता है।
परंतु इसके साथ कबीर संगति का महत्व बताते हैं — जो व्यक्ति जैसी संगति (अच्छी या बुरी) करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।
जैसे पक्षी जिस डाल पर बैठता है उससे वैसा ही प्रभाव ग्रहण करता है, वैसे ही मनुष्य की संगति उसके विचार और आचरण को ढालती है।

उत्तर: मन पक्षी की तरह स्वतंत्र है और जहाँ चाहे जाता है, परंतु व्यक्ति जैसी संगति करता है वैसा ही फल पाता है — अच्छी संगति से अच्छे, बुरी संगति से बुरे परिणाम मिलते हैं।

प्रश्न 2

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए— (ख) "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप।।"

हल

कबीर कहते हैं कि सत्य बोलना और सत्य पर चलना सबसे बड़ी तपस्या है — उसके बराबर कोई तप नहीं।
इसी प्रकार झूठ बोलना सबसे बड़ा पाप है — कोई भी पाप झूठ के समान नहीं।
जिस व्यक्ति के हृदय में सच्चाई बसी है, उसके हृदय में स्वयं गुरु — अर्थात ईश्वर — का वास होता है।
यह दोहा सिखाता है कि सत्य ही ईश्वर है और सत्याचरण सबसे बड़ी भक्ति है।

उत्तर: सत्य सबसे बड़ी तपस्या है और झूठ सबसे बड़ा पाप। जिसके हृदय में सच है, उसके हृदय में ईश्वर का वास होता है।

प्रश्नावली 5.5 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय।" इस दोहे में गुरु को गोविंद (ईश्वर) से भी ऊपर स्थान दिया गया है। क्या आप इससे सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

हल

कबीर का तर्क है कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग गुरु ही दिखाता है। बिना गुरु के न ज्ञान मिलता है, न ईश्वर की प्राप्ति होती है।
इस दृष्टि से गुरु का स्थान ऊँचा है — वह माध्यम है जो शिष्य को ईश्वर से जोड़ता है।
व्यावहारिक जीवन में भी यही सत्य है — शिक्षक, माता-पिता, और मार्गदर्शक ही हमें जीवन की सही दिशा देते हैं।
अतः यह कहना उचित है कि गुरु का महत्व अत्यंत है, क्योंकि वे ही हमें ईश्वर की ओर ले जाते हैं।

उत्तर: गुरु को इसलिए ऊँचा स्थान दिया गया है क्योंकि वे ही ईश्वर का मार्ग दिखाते हैं; बिना गुरु के ज्ञान और भक्ति संभव नहीं — यह विचार सहमति के योग्य है।

प्रश्न 2

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।" इस दोहे में कहा गया है कि सिर्फ बड़ा या संपन्न होना ही पर्याप्त नहीं है। बड़े या संपन्न होने के साथ-साथ मनुष्य में और कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए? अपने विचार साझा कीजिए।

हल

खजूर का पेड़ ऊँचा होते हुए भी न छाया देता है, न फल सुलभ होता है — इसलिए वह उतना उपयोगी नहीं।
इसी प्रकार केवल धन-सम्पन्न या उच्च-पदस्थ होना पर्याप्त नहीं; व्यक्ति में निम्नलिखित गुण भी होने चाहिए—
1. उदारता — दूसरों की सहायता करने की भावना।
2. विनम्रता — पद या सम्पत्ति का अहंकार न रखना।
3. परोपकार — अपने संसाधनों और ज्ञान से दूसरों का भला करना।
4. सहानुभूति — दूसरों के दुःख-सुख में साथ देना।
इन गुणों के बिना बड़प्पन या सम्पन्नता निरर्थक है।

उत्तर: बड़े होने के साथ उदारता, विनम्रता, परोपकार और सहानुभूति जैसे गुण होने चाहिए, तभी व्यक्ति का बड़प्पन सार्थक होता है।

प्रश्न 3

"ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।" क्या आप मानते हैं कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं, स्वयं पर भी पड़ता है? आपके बोले गए शब्दों ने आपके या किसी अन्य के स्वभाव या मनोदशा को कैसे परिवर्तित किया? उदाहरण सहित बताइए।

हल

हाँ, कबीर का यह कथन बिल्कुल सत्य है। शब्दों का प्रभाव बोलने वाले पर भी पड़ता है।
जब हम क्रोध में कड़वे शब्द बोलते हैं, तो हम स्वयं भी अशांत हो जाते हैं; परंतु जब हम शांत और मधुर भाषा में बात करते हैं, तो हमारा मन भी हल्का और शांत होता है।
उदाहरण — यदि किसी मित्र से गलतफहमी हो और हम क्रोध में बात करें तो दोनों का मन बिगड़ता है। लेकिन यदि हम शांत भाव से अपनी बात रखें तो समस्या का समाधान होता है और मन भी प्रसन्न रहता है।
इस प्रकार मधुर वाणी स्वयं के लिए भी लाभकारी है।

उत्तर: हाँ, शब्दों का प्रभाव स्वयं पर भी पड़ता है — मधुर वाणी बोलने से स्वयं का मन भी शांत होता है, कड़वे शब्द बोलने से स्वयं भी अशांत होते हैं।

प्रश्नावली 5.6 — दोहे की रचना — काव्य-विशेषताएँ

प्रश्न 1

दोहों की उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमें— (1) एक ही अक्षर से प्रारंभ होने वाले (जैसे— राजा, रस्सी, रात) दो या दो से अधिक शब्द एक साथ आए हैं। (अनुप्रास अलंकार)

हल

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।" — 'बराबर' शब्द दो बार, 'स' से 'साँच', 'बराबर' की आवृत्ति।
"सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।" — 'स' से 'सार-सार' (शब्द की आवृत्ति तथा अनुप्रास)।
"साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।" — 'स' से 'साधू', 'सूप', 'सुभाय' — तीन शब्द एक ही अक्षर से।

उत्तर: "साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।" — साधू, सूप, सुभाय (स-अनुप्रास); "सार-सार को गहि रहै" — सार-सार (स-अनुप्रास)

प्रश्न 2

(2) एक शब्द एक साथ दो बार आया है। (जैसे— बार-बार) (पुनरुक्ति प्रकाश)

हल

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।" — 'बराबर' शब्द एक ही दोहे में दो बार आया है।
"सार-सार को गहि रहै" — 'सार' शब्द दो बार (सार-सार) एक साथ आया है।
"कबिरा मन पंछी भया, भावैं तहाँ जाय।" — 'भावैं' एकल है, परंतु 'सार-सार' स्पष्ट पुनरुक्ति है।

उत्तर: "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।" — 'बराबर' दो बार; "सार-सार को गहि रहै" — 'सार' दो बार

प्रश्न 3

(3) लगभग एक जैसे शब्द, जिनमें केवल एक मात्रा भर का अंतर है (जैसे— जल, जाल) एक ही पंक्ति में आए हैं।

हल

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।" — 'बोलना' और 'चूप' भावार्थ में विपरीत पर ध्वनि में समान नहीं; किंतु 'भला-भला' की आवृत्ति ध्यान देने योग्य है।
"बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।" — 'बिन' और 'बिना' लगभग एक जैसे शब्द एक ही पंक्ति में हैं।
"साँच बराबर... झूठ बराबर" — 'साँच' और 'झूठ' विपरीतार्थक हैं; 'बराबर' की पुनरुक्ति।

उत्तर: "बिन पानी साबुन बिना" — 'बिन' और 'बिना' (लगभग एक जैसे शब्द, एक ही पंक्ति में)

प्रश्न 4

(4) एक ही पंक्ति में विपरीतार्थक शब्दों (जैसे— अच्छा-बुरा) का प्रयोग किया गया है।

हल

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।" — 'साँच' (सत्य) और 'झूठ' विपरीतार्थक; 'तप' और 'पाप' भी विपरीतार्थक।

"सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।" — 'सार' (ठोस/सार्थक) और 'थोथा' (खोखला/व्यर्थ) विपरीतार्थक।

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।" — 'बोलना' और 'चूप' विपरीतार्थक।

उत्तर: "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।" — साँच/झूठ और तप/पाप (विपरीतार्थक); "सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।" — सार/थोथा (विपरीतार्थक)

प्रश्न 5

(5) किसी की तुलना किसी अन्य से की गई है। (जैसे— दूध जैसा सफेद) (उपमा अलंकार)

हल

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।" — बड़े व्यक्ति की तुलना खजूर के पेड़ से की गई है (उपमा अलंकार)।

"साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।" — साधु की तुलना सूप से की गई है (उपमा अलंकार)।

उत्तर: "जैसे पेड़ खजूर" — बड़े व्यक्ति की उपमा खजूर से; "जैसा सूप सुभाय" — साधु की उपमा सूप से

प्रश्न 6

(6) किसी को कोई अन्य नाम दे दिया गया है। (जैसे— मुख चंद्र है) (रूपक अलंकार)

हल

"कबिरा मन पंछी भया, भावैं तहाँ जाय।" — मन को सीधे 'पंछी' कह दिया गया है, उपमा नहीं बल्कि रूप-आरोपण है (रूपक अलंकार)।

उत्तर: "कबिरा मन पंछी भया" — मन को 'पंछी' कहा गया है (रूपक अलंकार)

प्रश्न 7

(7) किसी शब्द की वर्तनी थोड़ी अलग है। (जैसे— 'चुप' के स्थान पर 'चूप')

हल

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।" — यहाँ 'चुप' के स्थान पर 'चूप' लिखा गया है (दोहे की मात्रा/छंद के लिए)।

"जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप।।" — 'हृदय' के स्थान पर 'हिरदे' (लोकभाषा/ब्रज रूप)।

"बलिहारी गुरु आपने" — 'बलिहारी' का अर्थ 'बलिहार जाना / न्योछावर होना' है; यह ब्रज-प्रयोग है।

उत्तर: "चूप" — 'चुप' की जगह 'चूप'; "हिरदे" — 'हृदय' की जगह 'हिरदे' (ब्रज-रूप)

प्रश्न 8

(8) उदाहरण द्वारा कही गई बात को समझाया गया है। (दृष्टांत/उदाहरण अलंकार)

हल

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।" — बड़े-लेकिन-निष्फल व्यक्ति को समझाने के लिए खजूर के पेड़ का उदाहरण दिया गया है।
"निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।" — निंदक के महत्व को समझाने के लिए बिना पानी-साबुन के सफाई का उदाहरण दिया गया है।
"साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय। सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।" — संत की विवेकशीलता बताने के लिए सूप का उदाहरण दिया गया है।

उत्तर: "जैसे पेड़ खजूर" (बड़प्पन का खोखलापन बताने के लिए); "बिन पानी साबुन बिना" (निंदक की उपयोगिता बताने के लिए); "जैसा सूप सुभाय" (संत की विवेकशीलता बताने के लिए) — सभी में उदाहरण द्वारा बात समझाई गई है।

प्रश्नावली 5.7 — आज के समय में — दोहा पहचान

प्रश्न 1

नीचे कुछ घटनाएँ दी गई हैं। इन्हें पढ़कर आपको कबीर के कौन-से दोहे याद आते हैं? घटनाओं के नीचे दिए गए रिक्त स्थान पर उन दोहों को लिखिए— घटना 1: अहमद का मन पढ़ाई में नहीं लगता था और वह गलत संगति में चला गया। कुछ समय बाद जब उसके अंक कम आए तो उसे समझ में आया — "संगति का असर जीवन पर पड़ता है।"

हल

यह घटना 'संगति के प्रभाव' की बात करती है।
इस पर कबीर का यह दोहा याद आता है—
"कबिरा मन पंछी भया, भावैं तहाँ जाय।
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।"
अर्थ — अहमद ने बुरी संगति की इसलिए उसे बुरा फल मिला।

उत्तर: "कबिरा मन पंछी भया, भावैं तहाँ जाय। जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।"

प्रश्न 2

घटना 2: एक विद्यार्थी इंटरनेट पर लगातार सूचनाएँ खोज रहा था। उसके पिता ने कहा — "हर जानकारी सही नहीं होती, सही बातों को चुनो और बेकार छोड़ दो।"

हल

यह घटना विवेक से सार-असार का चुनाव करने की बात करती है।
इस पर कबीर का यह दोहा याद आता है—
"साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।"
अर्थ — जैसे सूप सार रख लेता है और थोथा उड़ा देता है, वैसे ही विद्यार्थी को सही जानकारी लेनी चाहिए और व्यर्थ छोड़ देनी चाहिए।

उत्तर: "साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय। सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।"

प्रश्न 3

घटना 3: आपका एक मित्र आपकी किसी गलत बात पर आपकी आलोचना करता है। आप पहले परेशान होते हैं, लेकिन फिर आपने सोचा — "आलोचना मुझे सुधरने का मौका देती है, मुझे इन बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए। इसे सकारात्मक रूप से लेना चाहिए।"

हल

यह घटना आलोचक के महत्व को दर्शाती है।
इस पर कबीर का यह दोहा याद आता है—
"निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।

बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।"

अर्थ — आलोचक (निंदक) हमें हमारी कमियाँ बताकर बिना पानी-साबुन के सुधार देता है; इसलिए उसे पास रखना लाभकारी है।

उत्तर: "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।"

प्रश्न 4

घटना 4: रीमा ने अपने गुस्से में सहकर्मी को बुरा-भला कह दिया, जिससे वातावरण बिगड़ गया। बाद में उसने समझा कि अगर वह शांति से बात करती तो समस्या हल हो जाती।

हल

यह घटना मधुर वाणी के महत्व को दर्शाती है।

इस पर कबीर का यह दोहा याद आता है—

"ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।

औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।"

अर्थ — रीमा ने अहंकार में कड़वे शब्द बोले, जिससे वातावरण बिगड़ा। यदि वह अहंकार छोड़कर मधुर वाणी बोलती तो दूसरे भी शांत रहते और वह स्वयं भी शांत रहती।

उत्तर: "ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।"

प्रश्न 5

घटना 5: कक्षा में मोहन ने बहुत अधिक बोलकर सबको परेशान कर दिया, जबकि रमेश बिल्कुल चुप रहा। गुरुजी ने कहा — "बोलचाल में संतुलन आवश्यक है, न अधिक बोलो, न अधिक चुप रहो।"

हल

यह घटना बोलने और चुप रहने में संतुलन की बात करती है।

इस पर कबीर का यह दोहा याद आता है—

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।"

अर्थ — न बहुत बोलना अच्छा है, न एकदम चुप रहना; जीवन के हर पहलू में संतुलन आवश्यक है।

उत्तर: "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप। अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।"

प्रश्न 6

घटना 6: सुरेश को जब 'प्रतिभा सम्मान' मिला तो उसने कहा — "इसमें मेरे परिश्रम के साथ मेरे गुरुजनों का मार्गदर्शन भी सम्मिलित है।"

हल

यह घटना गुरु के महत्व और कृतज्ञता की बात करती है।

इस पर कबीर का यह दोहा याद आता है—

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।"
अर्थ — सुरेश ने गुरुजनों के मार्गदर्शन को स्वीकार किया — ठीक वैसे जैसे कबीर ने गुरु को गोविंद से भी बड़ा माना।

उत्तर: "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।"